नवें इमाम - इमाम मोहम्मद तक़ी (अलै.)

जवानी रोएगी जिस पर सदा वह कुशतए ग़म
नवें इमाम मोहम्मद तक़ी शहे आलम

जुदा पदर से हुए पाँच साल के सिन में
गए इमाम रज़ाए ग़रीब सूए अजम

रहे मदीने में छः साल बाप से छुटकर
के मोतासिम ने बुलाया इराक़ में बासितम

रखा बाइज़्ज़तो तौक़ीर पहले पास अपने
दिलाया खाने में फिर शाहेदीन को ज़हरे सितम

है दूसरी यह रिवाएत था ज़हर शरबत में
के जिस से राहिए जन्नत हुए इमामे नहुम

थी ज़ौजा आपकी मामूं रशीद की दुख़्तर
उस उम्मे फ़ज़्ल के हाथों हुआ यह जुल्म व सितम

गरज़ के कातिले हज़रत है मोतसिम बिल्लाह
दिया हो खाने मे था शरबते अनार में सम

सहशम्बा और थी उन्तीस माहे ज़ीक़ादा
सिधारे दो सदो बिस्तुम में शाह सूए इरम

हुई है जिन्दगी दुशवार हिन्द में अब तो
बुला लो 'फिक्र' को रौज़े पर या शहे आलम